प्रभात खबर के वरिष्ठ पत्रकार राजीव पांडेय को मिला 'लाडली मीडिया अवॉर्ड'

चर्चा में क्यों?

हाल ही में लैंगिक समानता के क्षेत्र में काम करने वाली प्रतिष्ठित संस्था 'पॉपुलेशन फर्स्ट' द्वारा प्रभात खबर के रांची यूनिट के वरिष्ठ पत्रकार राजीव पांडेय को 'लाडली मीडिया अवॉर्ड्स 2023' से सम्मानित किया गया है।

प्रमुख बिंदु

- विदित हो कि 'पॉपुलेशन फर्स्ट' संस्था की ओर से लैंगिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिये लाडली मीडिया अवॉर्ड दिया जाता है। संस्था द्वारा लाडली मीडिया अवॉर्ड की घोषणा इस साल 21 अक्तूबर को की गई थी।
- इस अवॉर्ड के लिये देश भर से 13 भाषाओं के करीब 850 से ज्यादा पत्रकारों ने प्रविष्टियां भेजी थी, जिनमें जूरी मेंबर्स ने 87 का चयन किया और उन्हें सम्मानित किया। इनके अलावा 31 पत्रकारों को जूरी प्रशंसा पत्र दिया गया।
- पॉपुलेशन फर्स्ट संस्था की ओर से आयोजित 13वें लाडली मीडिया एंड एडवरटाइजिंग अवॉर्ड फॉर जेंडर सेंसिटिविटी (रीजनल) 2023 में प्रभात खबर को अवार्ड मिला है। पिछले वर्ष भी प्रभात खबर के एक अन्य पत्रकार गुरुस्वरूप मिश्रा को भी इस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था।
- प्रभात खबर रांची यूनिट के मुख्य संवाददाता राजीव पांडेय द्वारा प्रकाशित घरेलू कामगारों पर एक स्टोरी 'घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहताना' के लिये उन्हें अवॉर्ड मिला।
- जयपुर के राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में बाबा आमटे दिव्यांग विश्वविद्यालय, जयपुर के कुलपति प्रो. डॉ. देव स्वरूप, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के पॉलिसी व साझेदारी प्रमुख जयदीप बिस्वास, यूएनएफपीए की प्रोग्राम मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट अनुजा गुलाटी और लोक संवाद संस्थान के सचिव कल्याण सहि कोठारी ने राजीव पांडेय को सम्मानित किया।
- गौरतलब है कि राजीव पांडेय को इससे पहले भी चेन्नई की संस्थान रीच द्वारा तीन फेलोशिप अवॉर्ड दिया गया है। वर्ष 2014 में टीबी की बीमारी में झारखंड की स्थिति पर, वर्ष 2019 में नॉन कम्युनिकेबल डिजीज और वर्ष 2023 में डायबटिीज पर फेलोशिप प्राप्त हुआ है।

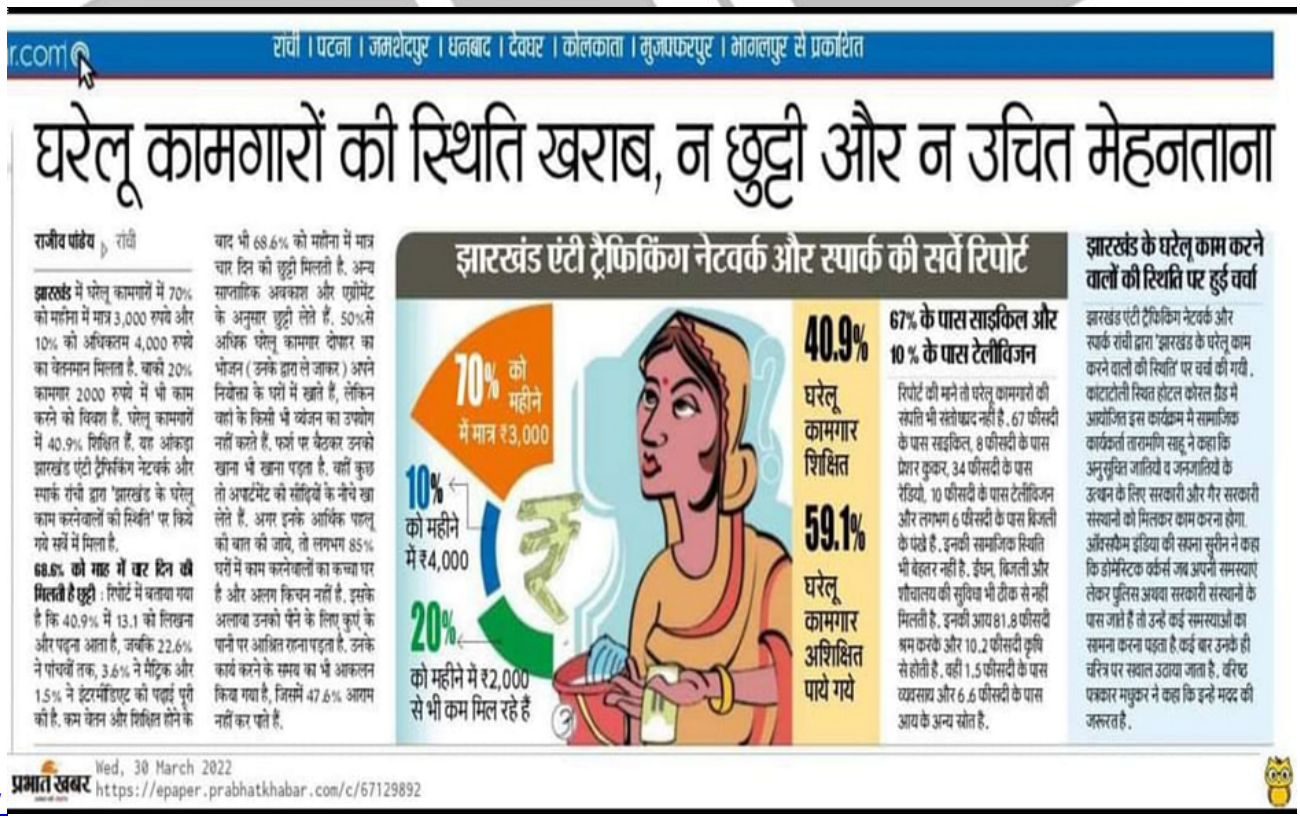
रांची | पटना | जमशेदपुर | धनबाद | देवघर | कोलकाता | मुजफ्फरपुर | भागलपुर से प्रकाशित

घरेलू कामगारों की स्थिति खराब, न छुट्टी और न उचित मेहनताना

राजीव पांडेय ▷ रांची

झारखंड में घरेलू कामगारों में 70% को महीना में मात्र 3,000 रुपये और 10% को अधिकतम 4,000 रुपये का वेतनमान मिलता है. बाकी 20% कामगार 2000 रुपये में भी काम करने को विवश हैं. घरेलू कामगारों में 40.9% शिक्षित हैं. यह आंकड़ा झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क रांची द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करनेवालों की स्थिति' पर किये गये सर्वे में मिला है.

68.6% को माह में चार दिन की मिलती है छुट्टी : रिपोर्ट में बताया गया है कि 40.9% में 13.1 को लिखना और पढ़ना आता है, जबकि 22.6% ने पांचवीं तक, 3.6% ने मैट्रिक और 1.5% ने इंटरमीडिएट को पढ़ाई पूरी की है. कम वेतन और शिक्षित होने के बाद भी 68.6% को महीना में मात्र चार दिन की छुट्टी मिलती है. अन्य सार्वजनिक अवकाश और एग्रीमेंट के अनुसार छुट्टी लेते हैं. 50% से अधिक घरेलू कामगार दोपहर का भोजन (उनके द्वारा ले जाकर) अपने नियोक्ता के घरों में खाते हैं, लेकिन वहां के किसी भी व्यंजन का उपयोग नहीं करते हैं. फर्श पर बैठकर उनको खाना भी खाना पड़ता है. वहीं कुछ तो अपार्टमेंट की सीढ़ियों के नीचे खा लेते हैं. अगर इनके आर्थिक पहलू की बात की जाये, तो लगभग 85% घरों में काम करनेवालों का कच्चा घर है और अलग किचन नहीं है. इसके अलावा उनको पैने के लिए कुएं के पानी पर आश्रित रहना पड़ता है. उनके कार्य करने के समय का भी आकलन किया गया है, जिसमें 47.6% आराम नहीं कर पाते हैं.

झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क की सर्वे रिपोर्ट

40.9% घरेलू कामगार शिक्षित

59.1% घरेलू कामगार अशिक्षित पाये गये

67% के पास साइकिल और 10% के पास टेलीविजन

रिपोर्ट की मानें तो घरेलू कामगारों की संपत्ति भी संतोषजनक नहीं है. 67 फीसदी के पास साइकिल, 8 फीसदी के पास प्रेशर कुकर, 34 फीसदी के पास रेडियो, 10 फीसदी के पास टेलीविजन और लगभग 6 फीसदी के पास बिजली के पंखे हैं. इनकी सामाजिक स्थिति भी बेहतर नहीं है. ईंधन, बिजली और शौचालय की सुविधा भी ठीक से नहीं मिलती है. इनकी आय 81.8 फीसदी श्रम करके और 10.2 फीसदी कृषि से होती है, वहीं 1.5 फीसदी के पास व्यवसाय और 6.6 फीसदी के पास आय के अन्य स्रोत है.

झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति पर हुई चर्चा

झारखंड एंटी ट्रैफिकिंग नेटवर्क और स्पार्क रांची द्वारा 'झारखंड के घरेलू काम करने वालों की स्थिति' पर चर्चा की गयी. कांटाटोली स्थित होटल कोरल हैड में आयोजित इस कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता तारामणि साहू ने कहा कि अनुसूचित जातियों व जनजातियों के उत्थान के लिए सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों को मिलकर काम करना होगा. ऑपरेशन इंडिया की सबना सुरीन ने कहा कि डोमेस्टिक वर्कर्स जब अपनी समस्याएं लेकर पुलिस अथवा सरकारी संस्थानों के पास जाते हैं तो उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है. कई बार उनके ही चरित्र पर सवाल उठाया जाता है. वरिष्ठ पत्रकार मधुकर ने कहा कि इन्हें मदद की जरूरत है.

प्रभात खबर Wed, 30 March 2022 https://epaper.prabhatkhabar.com/c/67129892

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prabhat-khabar-s-senio-journalis-rajee-pandey-received-laadl-media-award